ISBN : 978-81-953083-5-4

आओ लौटे कहानियों की ओर

संकलन कर्ता

SANDIPANI ACADEMY

संपादक
कुमारी ममता ध्रुव
डॉ. आभा दुबे

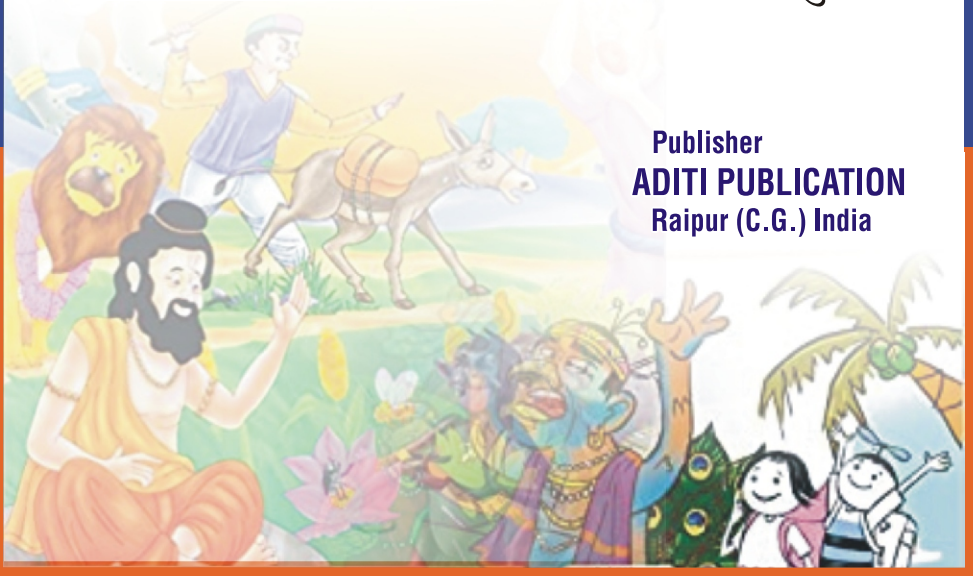

Publisher
ADITI PUBLICATION
Raipur (C.G.) India

आओ लौटें
कहानियों की ओर

संपादकगण
कुमारी ममता ध्रुव
डॉ. आभा दुबे

Publisher
Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

आओ लौटें कहानियों की ओर

2021
Edition - **01**

संपादकगण
ममता ध्रुव, डॉ. आभा दुबे
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-81-953083-5-4**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original publisher.

Price : Rs. **99/-**

Printed by
Yash Offest,
Lily Chowk, Purani Basti Raipur
Tahasil & District Raipur Chhattisgarh, India

Publisher :
Aditi Publication,
Near Ice factory, Opp Sakti Sound Service Gali, Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

संपादकगण

ममता ध्रुव,

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. आभा दुबे

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Board Mambers

Dr. Nazia Ahmed

Dr. Sandhya Pujari

प्रस्तावना (PREFACE)

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि अदिति पब्लिकेशन रायपुर की ओर से संपादकद्वय प्रो. ममता ध्रुव तथा डॉ. आभा दुबे द्वारा संपादित पुस्तक **"आओ लौटें कहानियों की ओर"** का प्रकाशन किया जा रहा है। कहानियों की श्रृंखला में यह पुस्तक अत्यंत रोचक, प्रेरक तथा ज्ञानवर्धक प्रसंग –मोतियों की माला के रूप में प्रस्तुत है। बाल–सुलभ मन में हिलोरें लेने वाली जिज्ञासाओं को इन कहानियों के माध्यम से संतुष्ट करते हुए नैतिक शिक्षा के द्वारा उनमें नीतिगत आचरण का विकास इस श्रृंखला में निहित मूल उद्देश्य है।

पाठक में नैतिक मुल्यों और प्रकृति के प्रति संवेदनशील व्यवहार का कहानियों के माध्यम से विकास करना प्रस्तुत पुस्तक का परम लक्ष्य है। ऐसे ही अन्य व्यवहार उपयोगी उदेश्य के आलोक में अनेक कहानियों का संकलन किया गया है। सह अस्तित्व की भावनाओं से प्रेरित मित्रता की कहानियों से पाठ्य प्रवेश किया गया है तथा आगे वन एवं वन्यजीवों से संबंधित गतिविधियों को समावेशित किया गया है।

महापुरूषों की प्रेरक जीवनी के रूप में स्वामी विवेकानंद के जीवन का उद्दरण लिया गया है। किसान की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए समय का महत्व भी एक प्रसंग के माध्यम से बताया गया है। नैतिक शिक्षा से ओतप्रोत अत्यंत महत्वपूर्ण कहानियों का यह संग्रह पाठकों में यथोचित आचरण एवं

गुणों का विकास करेगी, इस आशय के साथ समस्त पाठकों की सेवा में सादर प्रस्तुत है। पाठकों से अपेक्षा है कि लक्षित उद्देश्य की प्राप्ति में आपका सकारात्मक सहयोग एवं स्नेह सदैव बना रहेगा जो इस श्रृंखला के अगले अंक के प्रकाशन का मार्ग प्रसस्त करेगा।

आभार

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ करने की अभिलाषा होती हैं। इसी चाहत की प्राप्ति के लिए किसी पथ प्रदर्शक की आवश्यकता होती है यह प्रेरणा किसी महान व्यक्ति से ही मिलती है, व्यक्ति के जीवन में ऐसे कुछ लोग आते हैं। वे साधारण होते हुए भी महान होते हैं। ऐसे ही महाविद्यालय के निर्देशक आदरणीय श्री महेंद्र चौबे जी, प्रशासनिक अधिकारी श्री विनीत चौबे जी एवं संस्था की प्राचार्या डॉ. नाजिया अहमद, विभागाध्यक्ष डॉ. संध्या पुजारी, डॉ. आभा दुबे मुख्य सलाहकार का कुशल निर्देशन से *''आओ लौट चलें कहानियों की ओर''* इस कहानी पुस्तक को पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके सहयोग एवं मार्गदर्शन के बिना यह कार्य कदाचित अधूरा रहता एवं संस्था के सहायक प्राध्यापकों तथा समस्त विद्यार्थियों का भी समय–समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा। जिन्होंने इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया। इस कहानी के लेखककारों को भी पूरे सांदीपनी परिवार की ओर से आभार जिनके सहयोग से यह कार्य हुआ।

रविन्द्र चौबे
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
संसदीय कार्य,
कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा
जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली पालन,
जल संसाधन एवं आयाकट विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक : एम-3/1-5, महानदी भवन,
अटल नगर, नवा रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510223, 2221223
निवास : सी-4, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)
फोन : 0771-2331020, 2331021
फैक्स : 0771-2445836
ई-मेल : ravindrachoubeycg@gmail.com

क्रमांक 8615 दिनांक 22/11/2021

।। शुभकामना संदेश ।।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि सान्दीपनी एकेडमी, अछोटी (मुरमुन्दा), जिला दुर्ग के द्वारा **''आओ लौटे कहानियों की ओर''** पुस्तक में विभिन्न कहानियों का संकलन कर प्रकाशन किया जा रहा है। इस पुस्तक के माध्यम से राज्य ही नहीं अपितु पूरे देश में कहानी के अंदर छुपी रोचक जानकारियां, आत्मकथा, जीवनी जैसे ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण होगा जिससे लोगों में जानकारी संकलन करने एवं प्रचार-प्रसार करने का सशक्त माध्यम साबित होगा ।

मैं सान्दीपनी एकेडमी के अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं महाविद्यालय प्रबंधन से संबंधित समस्त सहभागियों को **''आओ लौटे कहानियों की ओर''** पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर शुभकामनाएं देता हूँ।

(रविन्द्र चौबे)

प्रति,

श्री महेन्द्र चौबे
संचालक
सान्दीपनी एकेडमी,
अछोटी (मुरमुन्दा), जिला दुर्ग (छ.ग.)

Admission Open

: www.sandipanigroup.org

SANDIPANI ACADEMY

कैम्पस - II

कुम्हारी-अहिवारा रोड, अछोटी (मुरमुंदा),
जिला - दुर्ग 490036 (छ.ग.)

9009077222, 9300008230
9009377222

कैम्पस - I

बिलासपुर - शिवरीनारायण रोड,पेण्ड्री (मस्तुरी),
जिला - बिलासपुर 495 551 (छ.ग.)

9009166222, 9752104140
9009466222

NURSING COURSES

बी.एस-सी. (नर्सिंग)
12वीं उत्तीर्ण (जीव विज्ञान)

एम.एस-सी. (नर्सिंग)
बी.एस-सी (नर्सिंग) / पो. बे. बी.एस-सी. (नर्सिंग)
उत्तीर्ण व 1 वर्ष का अनुभव

व्यापम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा
में शामिल होना अनिवार्य है ।
ऑनलाईन काउन्सलिंग के द्वारा प्रवेश

पोस्ट बेसिक बी.एस-सी. (नर्सिंग)
जी. एन. एम. उत्तीर्ण

जी.एन.एम. (जनरल नर्सिंग)
12 वीं उत्तीर्ण (किसी भी विषय में)
सीधे प्रवेश ले सकते है।

EDUCATION COURSES

डी. एल. एड्.
(2 वर्षीय पाठ्यक्रम)
12वीं उत्तीर्ण

बी. एड्.
(2 वर्षीय पाठ्यक्रम)
स्नातक उत्तीर्ण

व्यापम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा
में शामिल होना अनिवार्य है ।
ऑनलाईन काउन्सलिंग के द्वारा प्रवेश

बी.एस-सी. बी.एड्.
(4 वर्षीय पाठ्यक्रम)
12वीं उत्तीर्ण विज्ञान संकाय से

बी.ए. बी.एड्.
(4 वर्षीय पाठ्यक्रम)
12वीं उत्तीर्ण किसी भी संकाय से

I.T.I.

आई. टी. आई. (कोपा ट्रेड) (1 वर्षीय पाठ्यक्रम)
आई. टी. आई. (इलेक्ट्रीशियन) (1 वर्षीय पाठ्यक्रम)
आई. टी. आई. (स्टेनोग्राफर) (1 वर्षीय पाठ्यक्रम)

12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों का सीधे प्रवेश

अनुक्रमणिका

S.N.	Title	P.N.
01.	सच्चे मित्र (हिरण, कबूतर और चूहा)	01
02.	दो मित्र हाथी और खरगोश की कहानी	03
03.	शरारती बंदर	05
04.	सुंदरवन की कहानी	07
05.	चिंटू का भोलू	09
06.	चिड़ियाघर की सैर	10
07.	हिरण का बच्चा	12
08.	मित्र की आवश्यकता (तीन कछुओं की कहानी)	13
09.	किसान और परमात्मा	15
10.	आज ही क्यों नहीं?	17
11.	बोले हुए शब्द वापस नहीं आते	20
12.	सफलता का रहस्य	21
13.	सबसे कीमती चीज	23
14.	लकड़ी का कटोरा	25
15.	विश्वासघात	27
16.	शिष्टाचार–स्वामी विवेकानंद के जीवन का एक प्रेरक प्रसंग	29
17.	आखिरी उपदेश	31
18.	माँ–ईश्वर का भेजा फरिश्ता	33
19.	The Blind Girl (Change)	35

20.	Thinking Out of the Box (Creative Thinking)	36

1. सच्चे मित्र (हिरण, कबूतर और चूहा)

एक जंगल में एक कबूतर, चूहा और एक हिरण तीनों घनिष्ठ मित्र रहा करते थे। जंगल में बने सरोवर में पानी पीते फल खाते और वही सरोवर के आसपास घुमा फिरा करते थे।

एक समय की बात है जंगल में एक शिकारी, शिकार करने आया उसने हिरण को पकड़ने के लिए जाल बिछाया। काफी प्रयत्न और मेहनत से शिकारी ने जाल को छिपाकर लगाने सफलता पा ली। शिकारी के जाल में हिरण आसानी से फंस गया। इस पर कबूतर ने कहा घबराओ मत मित्र मैं देखता हूं शिकारी कहां है और कितनी दूर है। मैं उसको रोकता हूं जब तक हमारा मित्र चूहा तुम्हारे जाल को कुतर देगा और तुम जल्दी से निकल जाओगे।

यही हुआ कबूतर ने शिकारी को ढूंढना शुरू किया। वह दूर था कबूतर ने अपने प्राण को जोखिम में डालकर शिकारी के ऊपर वार करना शुरू कर दिया। कबूतर के प्रहार से शिकारी को कुछ समझ में नहीं आया और वह परेशान होकर बचने लगा मगर कबूतर शिकारी को ज्यादा देर तक रोक नहीं पाया।

शिकारी ने जल्दी ही कबूतर पर काबू पा लिया और वह जाल की ओर आया।

यहां चूहे ने जाल को लगभग काट दिया था अब हिरण आजाद होने वाला था, तभी शिकारी वहां पहुंचा इतने में कबूतर का एक झुंड वह जल्दी से आकर उस शिकारी के ऊपर ताबड़तोड़ आक्रमण कर दिया।

इस आक्रमण से शिकारी घबरा गया। थोड़ा सा समय उन

कबूतर पर काबू पाने में लगा। इतने मे चूहे ने निडर भाव से जाल को कुतर दिया जिससे हिरण आजाद हो गया। अब क्या था हिरण और चूहा अपने अपने रास्ते भाग चलें। कुछ दूर भागे होंगे उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो उनका मित्र कबूतर शिकारी के चंगुल में आ गया था।

हिरण ने सोचा उसने मेरी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डाल दी। इस पर हिरण धीरे–धीरे लंगड़ाकर चलने लगा शिकारी को ऐसा लगा कि हिरण घायल है उसके पैर में चोट लगी है इसलिए वह धीरे धीरे चल रहा है, वह भाग नहीं सकता।

शिकारी ने झट से कबूतर को छोड़ दिया और हिरण की तरफ दौड़ा।

शिकारी को आता देख कबूतर उड़ कर आकाश में चल पड़ा हिरण जो अभी नकल कर रहा था वह भी तेज दौड़ कर भाग गया और चूहा दौड़ कर बिल में घुस गया।

इस प्रकार तीनों दोस्तों की सूझबूझ ने एक दूसरे की रक्षा की।

नैतिक शिक्षा

आपसी सूझबुझ और समझदारी हो तो किसी भी मुसीबत का सामना किया जा सकता है।

2. दो मित्र हाथी और खरगोश की कहानी

एक जंगल में नंदू नामक एक हाथी रहता था और चिंटू खरगोश उसका दोस्त था। दोनों घनिष्ठ मित्र थे, वह जंगल में एक साथ घूमा करते थे। उन दोनों की दोस्ती के चर्चाएं होती थी।

एक दिन की बात है

मौसम अच्छा था, सुहावना था। हरी–हरी घास में चारों तरफ लहरा रही थी। पेड़ों पर कोमल–कोमल पत्तियां आई हुई थी।

खरगोश और हाथी ने खूब पेट भर कर के खाना खाया। जब दोनो विश्राम कर रहे थे तो उन्हें खेल खेलने का मन किया। दोनों ने प्लान बनाया और खेल खेलने के लिए तैयार हो गए। मगर पुराने खेल नहीं खेलना था, नए खेल खेलना था।

इस पर नंदू ने बोला हम ऐसा खेल खेलेंगे जो पुराने खेल से अच्छा हो। वह खेल ऐसे होगा, पहले मैं बैठ जाऊंगा और तुम मेरे ऊपर से उछल कर दूसरी पार कूदोगे फिर तुम बैठोगे मैं तुम्हारे ऊपर से कूद कर दूसरी तरफ निकलूंगा।

मगर इस खेल में एक–दूसरे को स्पर्श नहीं होना है। बिना स्पर्श किये दूसरी तरफ कूदना होगा।

चिंटू खरगोश डर रहा था किंतु मित्र का मन था इसलिए वह खेल खेलने को राजी हो गया।

पहले हाथी जमीन पर बैठ गया खरगोश दौड़ कर आया और हाथी के ऊपर से कूदकर दूसरी तरफ बिना स्पर्श किए कूद गया। अब हाथी की बारी थी खरगोश नीचे बैठा मगर डर के मारे यह सोच

रहा था कि कहीं मेरे ऊपर कूद गया तो मेरा तो कचूमर निकल जाएगा।

मेरे तो प्राण निकल जाएंगे इस पर हाथी दौड़ता हुआ आया।

हाथी के दौड़ने से दाएं बाएं लगे नारियल के पेड़ हिलने लगे और ऊपर से नारियल टूटकर दोनों पर गिरे।

हाथी कुछ समझा नहीं वहां से भाग गया।

खरगोश ने भी अपनी जान बचाकर वहां से भाग गया।

खरगोश भागता हुआ सोच रहा था मित्र हाथी से अच्छा यह नारियल है।

अभी मित्र मेरे ऊपर गिरता तो मेरा कचूमर निकल जाता।

नैतिक शिक्षा

सच्चा मित्र सभी को बनाना चाहिए मगर ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए जिससे हानि हो।

3. शरारती बंदर

एक समय की बात है, एक जंगल में एक शरारती बंदर रहा करता था। वह बन्दर सभी को पेड़ों से फल फेक–फेक करके मारा करता था। गर्मी का मौसम था पेड़ों पर खूब ढ़ेर सारे आम लगे हुए थे।

बंदर सभी पेड़ों पर घूम–घूमकर आमो का रस चूसता और खूब मजे करता। नीचे आने–जाने वाले जानवरों पर वह ऊपर से बैठे–बैठे आम फेंक कर मारता और खूब हंसता।

एक समय हाथी उधर से गुजर रहा था। बंदर जो पेड़ पर बैठकर आम खा रहा था, वह अपने शरारती दिमाग से लाचार था। बन्दर ने हाथी पर आम तोड़कर मारा। एक आम हाथी के कान पर लगी और एक आम उसके आंख पर लगी। इससे हाथी को गुस्सा आया। उसने अपना सूंढ़ ऊपर उठाकर बंदर को गुस्से में लपेट लिया और कहा कि मैं आज तुझे मार डालूंगा तू सब को परेशान करता है। इस पर बंदर ने अपने कान पकड़ लिए और माफी मांगी।

अब से मैं किसी को परेशान नहीं करूंगा और किसी को शिकायत का मौका नहीं दूंगा।

बंदर के बार बार माफी मांगने और रोने पर हाथी को दया आ गई उसने बंदर को छोड़ दिया।

कुछ समय बाद दोनों घनिष्ट मित्र हो गए। बंदर अब अपने मित्र को फल तोड़–तोड़ कर खिलाता और दोनों मित्र पूरे जंगल में घूमते थे।

नैतिक शिक्षा

किसी को परेशान नहीं करना चाहिए उसका परिणाम बुरा ही होता है।

4. सुंदरवन की कहानी

सुंदरवन नामक एक खूबसूरत जंगल था। वहां खूब ढ़ेर सारे जानवर, पशु–पक्षी रहा करते थे। धीरे–धीरे सुंदरवन की सुंदरता कम होती जा रही थी।

पशु–पक्षी भी वहां से कहीं दूसरे जंगल जा रहे थे। कारण यह था कि वहां पर कुछ वर्षों से बरसात नहीं हो रही थी।

जिसके कारण जंगल में पानी की कमी निरंतर होती जा रही थी। पेड़–पौधों की हरियाली खत्म हो रही थी, और पशु पक्षियों का मन भी वहां नहीं लग रहा था।

सभी वन को छोड़कर दूसरे वन में जा रहे थे कि गिद्धों ने ऊपर उड़ कर देखा तो उन्हें काले घने बादल जंगल की ओर आते नजर आए।

उन्होंने सभी को बताया कि जंगल की तरफ काले घने बादल आ रहे हैं , अब बारिश होगी।

इस पर सभी पशु–पक्षी वापस सुंदरवन आ गए। देखते ही देखते कुछ देर में खूब बरसात हुई। बरसात ईतनी हुई कि वह दो–तीन दिन तक होती रही।

सभी पशु पक्षी जब बरसात रुकने पर बाहर निकले तब उन्होंने देखा उनके तालाब और झील में खूब सारा पानी था। सारे पेड़ पौधों पर नए–नए पत्ते निकल आए थे। इस पर सभी खुशी हुए और सभी ने उत्सव मनाया।

सभी का मन प्रसन्नता बत्तख अब झील मैं तैर रहे थे हिरण

दौड़–दौड़कर खुशियां मना रहे थे और ढेर सारे पप्पीहे–दादुर मिलकर एक नए राग का अविष्कार कर रहे थे।

इस प्रकार सभी जानवर, पशु–पक्षी खुश थे अब उन्होंने दूसरे वन जाने का इरादा छोड़ दिया था और अपने घर में खुशी खुशी रहने लगे।

नैतिक शिक्षा

धैर्य का फल मीठा होता है।

5. चिंटू का भोलू

चिंटू एक छोटा सा बच्चा है। उसके पास एक भोलू नाम का सफेद रंग का कुत्ता है। चिंटू और भोलू दोनों अच्छे मित्र हैं। भोलू, चिंटू के घर में रहता है। वह चिंटू की ढेर सारी मदद करता है। चिंटू स्कूल जाने के लिए तैयार होता है तो भोलु उसकी मदद करता है। उसके जूते उसकी बोतल आदि झटपट चिंटू को दे देता है। भोलू घर में किसी दूसरे व्यक्ति को घुसने नहीं देता है।

पहले भों–भों करके पूरे घर को बता देता है कोई आदमी आया है।

गोलू अपने भोलू को प्यार से खाना खिलाता है और उसके साथ खेलता है।

चिंटू जब पार्क में खेलता है तो भोलू उसकी बोल को लाकर चिंटू को देता है।

भोलू घर में सभी का मन बहलाता है। वह कभी चौकीदार का काम करता है, तो कभी घर के नौकर का।

चिंटू की मम्मी जब छत पर पापड़ या गेहूं , चावल सूखने के लिए बिछ आती है, तो भोलु वहां निगरानी करता है। वह किसी चिड़िया और कौवे को बैठने नहीं देता और समान को बर्बाद करने नहीं देता। चिंटू जब बाजार जाता तो भोलु भी उसके पीछे पीछे चलता और दूसरे आवारा कुत्तों आधी से चिंटू को बचाता।

नैतिक शिक्षा

मित्रता किसी से भी करें उसको निभाए भी। मित्र आपकी सहायता करता है।

6. चिड़ियाघर की सैर

अमन अपने माता–पिता के साथ चिड़ियाघर की सैर करने जाता है। अमन क्योंकि बच्चा है और वह अपनी मम्मी के गोदी में चलता है, इसलिए चिड़ियाघर में उसके लिए टिकट नहीं लगता। मम्मी–पापा ने अपना टिकट लिया और वह तीनों मिलकर चिड़ियाघर के अंदर चले। अमन ने चिड़ियाघर के अंदर देखा एक तालाब है उसमें ढेर सारे बत्तख और बगुला तैर रहे हैं। उसे बहुत ही अच्छा लगा फिर उसने देखा एक बंदर है। वह छोटे–छोटे बंदरों को खिला रहा है, और उसके पीछे छोटे–छोटे बंदर भाग रहे हैं। वह उसके पापा होंगे। अमन ने फिर आगे एक भालू को देखा एक जिराफ को देखा और ढेर सारे शेर को भी देखा वह तेज–तेज चिल्ला रहा था, छोटे–छोटे बच्चे डर कर भाग रहे थे।

फिर चिंटू ने देखा एक हाथी का झुंड वहां पर खड़ा था और उसके छोटे–छोटे बच्चे भी वहां पर थे। वह आपस में खेल रहे थे और इस तमाशे को वहां खड़े ढेर सारे बच्चे देख रहे थे। अमन भी खड़ा हुआ और और हाथी के झुंड को दिखने लगाओ जब वहां से चले तो अमन अपनी मम्मी के गोदी में नहीं चल रहा था।

अमन ने देखा वहां छोटे–छोटे बच्चे आए हैं। वह अपने पैर पर चल रहे थे कोई भी अपने मम्मी–पापा के गोदी में नहीं चल रहा था।

इस पर अमन भी अपने छोटे–छोटे पैरों से चलने लगा इस पर अमन के मम्मी–पापा को बहुत खुशी हुई क्योंकि अब उसका बेटा चलना सीख रहा था।

अमन चिड़ियाघर में रेलगाड़ी से भी शैर की और ऊंट की सवारी भी की।

नैतिक शिक्षा

बच्चे अनुकरण से सीखते है, बच्चों के मन के विकास के लिए उन्हें दुनिया का रूप दिखाना चाहिए।

7. हिरण का बच्चा

एक जंगल में हिरण का परिवार रहता था। उस हिरण एक प्यारा सा सुंदर सा बच्चा था। एक दिन खरगोश से दौड़ हुई, हिरण का बच्चा खरगोश से आगे भागने लगा। वह जंगल पार कर गया, खेत पार कर गया, नदी भी पार कर गया, पर पहाड़ पार नहीं कर पाया।

चट्टान से टकराकर गिर गया और जोर–जोर से रोने लगा।

बंदर ने उसकी टांग सहलाई पर चुप नहीं हुआ। फिर भालू दादा ने गोद में उठा कर खिलाया उससे भी चुप नहीं हुआ। और सियार ने नाच किया उससे भी चुप नहीं हुआ, फिर हिरण की मां आई उसने उसे प्यार किया और कहा चलो उस पत्थर की पिटाई करते हैं। हिरण का बच्चा बोला नहीं! वह भी रोने लगेगा।

उसके बाद मां हंसने लगी बेटा हंसने लगा, बंदर हंसने लगा , भालू हंसने लगा सब हंसने लगे।

नैतिक शिक्षा

बालकों में संवेदना बड़ों से अधिक होती है। उसे बढ़ावा दे।

8. मित्र की आवश्यकता (तीन कछुओं की कहानी)

एक तालाब में तीन कछुए थे। दो कछुए आपस में खूब लड़ाई करते थे। तीसरा कछुआ समझदार था, वह इन दोनों के लड़ाई में नहीं पड़ता था। एक दिन की बात है लड़ाई करने वाले कछुए में से एक पत्थर से गिरकर उल्टा हो गया था। कछुए का पैर आसमान की ओर था और पीठ जमीन पर लगी हुई थी। उस कछुए ने काफी प्रयत्न किया किंतु वह सीधा नहीं हो पाया। आज उसे पछतावा हो रहा था उसने जीवन में लड़ाई–झगड़े के अलावा और किया ही क्या था। उल्टा हुए उसे काफी समय हो गया कोई भी उसके पास नहीं आया।

तालाब में दोनों कछुए इंतजार कर रहे थे।

काफी समय बीत जाने के बाद भी जब वह तालाब में नहीं आया। दोनों कछुओं को संदेह हुआ। दोनों कछुए ने ढूंढने का मन बनाया और तालाब से बाहर निकलकर उस की खोज करने लगे। तालाब से कुछ दूर एक पत्थर था, उसके उस पर वह कछुआ उल्टा गिरा हुआ था। दोनों कछुए दौड़ते हुए गए और उसे सीधा करके हालचाल पूछने लगे। वह कछुआ अपने किए पर शर्मिंदा था। जोर–जोर से रोने लगा और दोनों से फिर कभी लड़ाई न करने की बात कहकर माफी मांगने लगा।

तबसे तीनों कछुए तालाब में दोस्त बनकर रहने लगे।

एक दूसरे के साथ फिर कभी लड़ाई नहीं करते थे। क्योंकि उन्हें मालूम हो गया था कि एक–दूसरे की सहायता के बिना उनका जीना मुश्किल है।

नैतिक शिक्षा

अपने आसपास के लोगों से बैर नहीं करना चाहिए, क्योंकि समय पड़ने पर वही काम आते हैं।

9. किसान और परमात्मा

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया! कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जाये! हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी खऋराब हो जाये!

एक दिन बड़ा तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा, देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती–बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है, एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मै चाहू वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मै कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा! परमात्मा मुस्कुराये और कहा ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मै दखल नहीं करूँगा!

किसान ने गेहूं की फसल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी तब पानी! तेज धूप, ओले, बाढ़ ,आंधी तो उसने आने ही नहीं दी, समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी,क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी! किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को, की फसल कैसे करते हैं, बेकार ही इतने बरस हम किसानो को परेशान करते रहे.

फसल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एकदम से छाती पर हाथ रख कर बैठ गया! गेहूं की एक भी बाली के अन्दर गेहूं नहीं था, सारी बालियाँ अन्दर से खाली थी, बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा, प्रभु ये क्या हुआ?

तब परमात्मा बोले–

ये तो होना ही था, तुमने पौधों को संघर्ष का जरा सा भी

मौका नहीं दिया. ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी ओलों से जूझने दिया, उनको किसी प्रकार की चुनौती का अहसास जरा भी नहीं होने दिया, इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए, जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है ओले गिरते हैं तब पोधा अपने बल से ही खड़ा रहता है, वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वोही उसे शक्ति देता है, उर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है.सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने,गलने जैसी चुनौतियो से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है,उसे अनमोल बनाती है!

उसी तरह जिंदगी में भी अगर संघर्ष ना हो, चुनौती ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता! ये चुनौतियाँ ही हैं जो आदमी रूपी तलवार को धार देती हैं ,उसे सशक्त और प्रखर बनाती हैं, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियाँ तो स्वीकार करनी ही पड़ेंगी, अन्यथा हम खोखले ही रह जायेंगे. अगर जिंदगी में प्रखर बनना है, प्रतिभाशाली बनना है, तो संघर्ष और चुनौतियो का सामना तो करना ही पड़ेगा !

10. आज ही क्यों नहीं?

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर–सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन–संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा –''मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा।''

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते–करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर–चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना

पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ जरूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाजार से लोहे के बड़े–बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा की अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाजार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा। पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नीद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था. अब वह जल्दी–जल्दी बाजार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर–चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गुरूजी उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

मित्रों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं, पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं. इसलिए मैं यही कहना चाहती हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और

दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम,और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये – "आज ही क्यों नहीं?"

11. बोले हुए शब्द वापस नहीं आते

एक बार एक किसान ने अपने पडोसी को भला बुरा कह दिया, पर जब बाद में उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक संत के पास गया.उसने संत से अपने शब्द वापस लेने का उपाय पूछा।

संत ने किसान से कहा, " तुम खूब सारे पंख इकठ्ठा कर लो , और उन्हें शहर के बीचो–बीच जाकर रख दो। " किसान ने ऐसा ही किया और फिर संत के पास पहुंच गया।

तब संत ने कहा, " अब जाओ और उन पंखों को इकठ्ठा कर के वापस ले आओ"

किसान वापस गया पर तब तक सारे पंख हवा से इधर–उधर उड़ चुके थे. और किसान खाली हाथ संत के पास पहुंचा. तब संत ने उससे कहा कि ठीक ऐसा ही तुम्हारे द्वारा कहे गए शब्दों के साथ होता है,तुम आसानी से इन्हें अपने मुख से निकाल तो सकते हो पर चाह कर भी वापस नहीं ले सकते।

इस कहानी से क्या सीख मिलती हैः

कुछ कड़वा बोलने से पहले ये याद रखें कि भला–बुरा कहने के बाद कुछ भी कर के अपने शब्द वापस नहीं लिए जा सकते. हाँ, आप उस व्यक्ति से जाकर क्षमा जरूर मांग सकते हैं, और मांगनी भी चाहिए, पर human nature कुछ ऐसा होता है की कुछ भी कर लीजिये इंसान कहीं ना कहीं hurt हो ही जाता है.

जब आप किसी को बुरा कहते हैं तो वह उसे कष्ट पहुंचाने के लिए होता है पर बाद में वो आप ही को अधिक कष्ट देता है. खुद को कष्ट देने से क्या लाभ, इससे अच्छा तो है की चुप रहा जाए।

12. सफलता का रहस्य

एक बार एक नौजवान लड़के ने सुकरात से पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है?

सुकरात ने उस लड़के से कहा कि तुम कल मुझे नदी के किनारे मिलो. वो मिले। फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा और जब आगे बढ़ते–बढ़ते पानी गले तक पहुँच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सर पकड़ के पानी में डुबो दिया।

लड़का बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा, लेकिन सुकरात ताकतवर थे और उसे तब तक डुबोये रखे जब तक की वो नीला नहीं पड़ने लगा। फिर सुकरात ने उसका सर पानी से बाहर निकाल दिया और बाहर निकलते ही जो चीज उस लड़के ने सबसे पहले की वो थी हाँफते–हाँफते तेजी से सांस लेना।

सुकरात ने पूछा, "जब तुम वहाँ थे तो तुम सबसे ज्यादा क्या चाहते थे?"

लड़के ने उत्तर दिया,"सांस लेना"

सुकरात ने कहा," यही सफलता का रहस्य है. जब तुम सफलता को उतनी ही बुरी तरह से चाहोगे जितना की तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तुम्हे मिल जाएगी" इसके आलावा और कोई रहस्य नहीं है।

दोस्तों, जब आप सिर्फ और सिर्फ एक चीज चाहते हैं तो more often than not… वो चीज आपको मिल जाती है. जैसे छोटे बच्चों को देख लीजिये वे न चेंज में जीते हैं न निजनतम में, वे हमेशा

चतमेमदज में जीते हैं और जब उन्हें खेलने के लिए कोई खिलौना चाहिए होता है या खाने के लिए कोई टॉफी चाहिए होती है३तो उनका पूरा ध्यान, उनकी पूरी शक्ति बस उसी एक चीज को पाने में लग जाती है वे उस चीज को पा लेते हैं।

इसलिए सफलता पाने के लिए FOCUS बहुत जरूरी है, सफलता को पाने की जो चाहता है उसमे intensity होना बहुत जरूरी है और जब आप वो फोकस और वो इंटेंसिटी पा लेते हैं तो सफलता आपको मिल ही जाती है।

13. सबसे कीमती चीज

एक जाने–माने स्पीकर ने हाथ में पांच सौ का नोट लहराते हुए अपनी सेमीनार शुरू की. हाल में बैठे सैकड़ों लोगों से उसने पूछा," ये पांच सौ का नोट कौन लेना चाहता है?" हाथ उठना शुरू हो गए.

फिर उसने कहा, "मैं इस नोट को आपमें से किसी एक को दूंगा पर उससे पहले मुझे ये कर लेने दीजिये." और उसने नोट को अपनी मुट्ठी में चिमोड़ना शुरू कर दिया और फिर उसने पूछा, "कौन है जो अब भी यह नोट लेना चाहता है?" अभी भी लोगों के हाथ उठने शुरू हो गए।

"अच्छा" उसने कहा," अगर मैं ये कर दूं?" और उसने नोट को नीचे गिराकर पैरों से कुचलना शुरू कर दिया. उसने नोट उठाई , वह बिल्कुल चिमुड़ी और गन्दी हो गयी थी।

"क्या अभी भी कोई है जो इसे लेना चाहता है?" और एक बार फिर हाथ उठने शुरू हो गए।

''दोस्तों, आप लोगों ने आज एक बहुत महत्त्वपूर्ण पाठ सीखा है। मैंने इस नोट के साथ इतना कुछ किया पर फिर भी आप इसे लेना चाहते थे क्योंकि ये सब होने के बावजूद नोट की कीमत घटी नहीं, उसका मूल्य अभी भी 500 था।

जीवन में कई बार हम गिरते हैं, हारते हैं, हमारे लिए हुए निर्णय हमें मिटटी में मिला देते हैं. हमें ऐसा लगने लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है। लेकिन आपके साथ चाहे जो हुआ हो या भविष्य में जो हो जाए, आपका मूल्य कम नहीं होता। आप स्पेशल हैं,

इस बात को कभी मत भूलिए।

कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल के सपनो को बर्बाद मत करने दीजिये. याद रखिये आपके पास जो सबसे कीमती चीज है, वो है आपका जीवन।"

14. लकड़ी का कटोरा

एक वृद्ध व्यक्ति अपने बहु–बेटे के यहाँ शहर रहने गया। उम्र के इस पड़ाव पर वह अत्यंत कमजोर हो चुका था, उसके हाथ कांपते थे और दिखाई भी कम देता था। वो एक छोटे से घर में रहते थे, पूरा परिवार और उसका चार वर्षीया पोता एक साथ डिनर टेबल पर खाना खाते थे। लेकिन वृद्ध होने के कारण उस व्यक्ति को खाने में बड़ी दिक्कत होती थी। कभी मटर के दाने उसकी चम्मच से निकल कर फर्श पे बिखर जाते तो कभी हाँथ से दूध छलक कर मेजपोश पर गिर जाता।

बहु –बेटे एक –दो दिन ये सब सहन करते रहे पर अब उन्हें अपने पिता की इस काम से चिढ होने लगी।

"हमें इनका कुछ करना पड़ेगा", लड़के ने कहा।

बहु ने भी हाँ में हाँ मिलाई और बोली, "आखिर कब तक हम इनकी वजह से अपने खाने का मजा किरकिरा करते रहेंगे, और हम इस तरह चीजों का नुकसान होते हुए भी नहीं देख सकते।"

अगले दिन जब खाने का वक्त हुआ तो बेटे ने एक पुरानी मेज को कमरे के कोने में लगा दिया, अब बूढ़े पिता को वहीं अकेले बैठ कर अपना भोजन करना था। यहाँ तक कि उनके खाने के बर्तनों की जगह एक लकड़ी का कटोरा दे दिया गया था, ताकि अब और बर्तन ना टूट–फूट सकें।

बाकी लोग पहले की तरह ही आराम से बैठ कर खाते और जब कभी–कभार उस बुजुर्ग की तरफ देखते तो उनकी आँखों में आंसू दिखाई देते। यह देखकर भी बहु–बेटे का मन नहीं पिघलता,

वो उनकी छोटी से छोटी गलती पर ढेरों बातें सुना देते। वहां बैठा बालक भी यह सब बड़े ध्यान से देखता रहता, और अपने में मस्त रहता।

एक रात खाने से पहले, उस छोटे बालक को उसके माता –पिता ने जमीन पर बैठ कर कुछ करते हुए देखा, "तुम क्या बना रहे हो?" पिता ने पूछा,

बच्चे ने मासूमियत के साथ उत्तर दिया– अरे मैं तो आप लोगों के लिए एक लकड़ी का कटोरा बना रहा हूँ, ताकि जब मैं बड़ा हो जाऊं तो आप लोग इसमें खा सकें।

और वह पुनः अपने काम में लग गया। पर इस बात का उसके माता –पिता पर बहुत गहरा असर हुआ, उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला और आँखों से आंसू बहने लगे। वो दोनों बिना बोले ही समझ चुके थे कि अब उन्हें क्या करना है। उस रात वो अपने बूढ़े पिता को वापस डिनर टेबल पर ले आये, और फिर कभी उनके साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया।

दोस्तों, हम अक्सर अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा या उवतंस अंसनमे देने की बात करते हैं पर हम ये भूल जाते हैं की असल शिक्षा शब्दों में नहीं हमारे कर्म में छुपी होती है। अगर हम बच्चों को बस ये उपदेश देते रहे कि बड़ों का आदर करो..... सबका सम्मान करो३और खुद इसके उलट व्यवहार करें तो बच्चा भी ऐसा ही करना सीखता है। इसलिए कभी भी अपने पेरेंट्स के साथ ऐसा व्यवहार ना करें कि कल को आपकी संतान भी आपके लिए लकड़ी का कटोरा तैयार करने लगे!

15. विश्वासघात

"मॉम.!! "मैं सोच रही थी! कि आज रात को मैं शिखा के घर पर ही रुक जाऊंगी। थोड़ी कम्बाइन्ड स्टडी करनी है, वो परसों मैथ्स का टेस्ट है ना उसी की तैयारी करनी है"। किताबें समेंटते हुए चारू बोलती जा रही थी!

"पर बेटा ..रात को ..किसी के घर रुकना मुझे तो ठीक नहीं लगता।"

"मॉम!!", नाराज होती हुई चारू ने कहा, "देखो ना पापा मां जाने नहीं दे रहीं।।

पापा माँ पर नाराज होते हुए बोले, "अरे रुक जाने दो ना चारू को उसकी सहेली के घर, एक रात की ही तो बात है। अपने बच्चों पर विश्वास करना सीखो!, जाओ बेटा"! जाओ!"

चारू ने पापा को थैंक्स कहा और अपनी स्कूटी से निकल गयी।

रात का एक बजा था, फोन की घनघनाहट सुन कर वर्मा जी घबरा कर उठे, फोन पर आवाज आयी, "मि. वर्मा आप तुरन्त थाना गांधी नगर आने का कष्ट करें।"

यह सुनकर वर्मा जी की सांसें गले में अटक गयीं, डर रहे थे की कहीं कोई अनहोनी ना हुई हो.... कहीं बेटी को तो कुछ..... बदहवास थाने पहुंचे,देखा दस–पंद्रह लड़के लड़कियां मुंह छिपाये बैठे थे उनमें अपनी चारू को पहचानने में जरा भी देर नहीं लगी।

"देखिये वर्मा जी!!! ये बच्चे दिल्ली के बाहर एक फार्म हाउस

में ड्रग्स के साथ रेव पार्टी करते हुए पकड़े गये हैं!

आप लोग ना जाने अपने बच्चों को कैसे संस्कार देते हैं....ना जाने इतनी रात गए घर से बाहर निकलने की परमिशन कैसे दे देते हैं आप लोग.... शर्म आनी चाहिए!

वर्मा जी शर्म का सिर शर्म से झुका जा रहा था, वो बस एक ही बात सोच रहे थे..... जब उन्होंने अपनी बेटी पर इतना विश्वास किया तो आखिर क्यों उनकी बेटी ने उनके साथ विश्वासघात कर दिया!

दोस्तों, इस दुनिया में कोई है जो आपका सबसे अधिक ध्यान रखता है, सबसे अधिक आपका भला चाहता है..... तो वो आपके parents हैं। वो आपको ऊपर से सख्त लग सकते हैं पर उनके भीतर आपके लिए आपार प्रेम होता है और कभी भी आपको उस प्रेम का नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए..... कभी भी आपको उनके विश्वास के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिए!

16. शिष्टाचार–स्वामी विवेकानंद के जीवन का एक प्रेरक प्रसंग

शिष्टाचार

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि–विश्व में अधिकांश लोग इसलिए असफल हो जाते हैं, क्योंकि उनमें समय पर साहस का संचार नही हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं।

स्वामीजी की कही सभी बातें हमें उनके जीवन काल की घटनाओं में सजीव दिखाई देती हैं। उपरोक्त लिखे वाक्य को शिकागो की एक घटना ने सजीव कर दिया, किस तरह विपरीत परिस्थिती में भी उन्होने भारत को गौरवान्वित किया। हमें बहुत गर्व होता है कि हम इस देश के निवासी हैं जहाँ विवेकानंद जी जैसे महान संतो का मार्ग–दशर्न मिला। आज मैं आपके साथ शिकागो धर्म सम्मेलन से सम्बंधित एक छोटा सा वृत्तान्त बता रही हूँ जो भारतीय संस्कृति में समाहित शिष्टाचार की ओर इंगित करता है।

1893 में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन चल रहा था। स्वामी विवेकानंद भी उसमें बोलने के लिए गये हुए थे। 11सितंबर को स्वामी जी का व्याखान होना था। मंच पर ब्लैक बोर्ड पर लिखा हुआ था– हिन्दू धर्म–मुर्दा धर्म। कोई साधारण व्यक्ति इसे देखकर क्रोधित हो सकता था, पर स्वामी जी भला ऐसा कैसे कर सकते थे। वह बोलने के लिये खडे हुए और उन्होने सबसे पहले (अमरीकावासी बहिनों और भाईयों) शब्दों के साथ श्रोताओं को संबोधित किया। स्वामीजी के शब्द ने जादू कर दिया, पूरी सभा ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया।

इस हर्ष का कारण था, स्त्रियों को पहला स्थान देना। स्वामी

जी ने सारी वसुधा को अपना कुटुबं मानकर सबका स्वागत किया था। भारतीय संस्कृति में निहित शिष्टाचार का यह तरीका किसी को न सूझा था। इस बात का अच्छा प्रभाव पङा। श्रोता मंत्र मुग्ध उनको सुनते रहे, निर्धारित 5 मिनट कब बीत गया पता ही न चला। अध्यक्ष कार्डिनल गिबन्स ने और आगे बोलने का अनुरोध किया। स्वामीजी 20 मिनट से भी अधिक देर तक बोलते रहे।

स्वामीजी की धूम सारे अमेरिका में मच गई। देखते ही देखते हजारों लोग उनके शिष्य बन गए। और तो और, सम्मेलन में कभी शोर मचता तो यह कहकर श्रोताओं को शान्त कराया जाता कि यदि आप चुप रहेंगे तो स्वामी विवेकानंद जी का व्याख्यान सुनने का अवसर दिया जायेगा। सुनते ही सारी जनता शान्त हो कर बैठ जाती।

अपने व्याख्यान से स्वामीजी ने यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दू धर्म भी श्रेष्ठ है, जिसमें सभी धर्मो को अपने अंदर समाहित करने की क्षमता है। भारतिय संसकृति, किसी की अवमानना या निंदा नही करती। इस तरह स्वामी विवेकानंद जी ने सात समंदर पार भारतीय संसकृति की ध्वजा फहराई।

17. आखिरी उपदेश

गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहे शिष्यों में आज काफी उत्साह था, उनकी बारह वर्षों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और अब वो अपने घरों को लौट सकते थे. गुरु जी भी अपने शिष्यों की शिक्षा–दीक्षा से प्रसन्न थे और गुरुकुल की परंपरा के अनुसार शिष्यों को आखिरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे।

उन्होंने ऊँची आवाज में कहा, "आप सभी एक जगह एकत्रित हो जाएं, मुझे आपको आखिरी उपदेश देना है."

गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए सभी शिष्य एक जगह एकत्रित हो गए.

गुरु जी ने अपने हाथ में कुछ लकड़ी के खिलौने पकडे हुए थे, उन्होंने शिष्यों को खिलौने दिखाते हुए कहा, "आप को इन तीनो खिलौनों में अंतर ढूँढने हैं।"

सभी शिष्य ध्यानपूर्वक खिलौनों को देखने लगे, तीनो लकड़ी से बने बिलकुल एक समान दिखने वाले गुड्डे थे। सभी चकित थे की भला इनमे क्या अंतर हो सकता है ?

तभी किसी ने कहा, "अरे, ये देखो इस गुड्डे के में एक छेद है।"

यह संकेत काफी था, जल्द ही शिष्यों ने पता लगा लिया और गुरु जी से बोले,

"गुरु जी इन गुड्डों में बस इतना ही अंतर है किः

एक के दोनों कान में छेद है,

दूसरे के एक कान और एक मुंह में छेद है,

और तीसरे के सिर्फ एक कान में छेद है"

गुरु जी बोले, "बिलकुल सही, और उन्होंने धातु का एक पतला तार देते हुए उसे कान के छेद में डालने के लिए कहा."

शिष्यों ने वैसा ही किया। तार पहले गुड्डे के एक कान से होता हुआ दूसरे कान से निकल गया, दूसरे गुड्डे के कान से होते हुए मुंह से निकल गया और तीसरे के कान में घुसा पर कहीं से निकल नहीं पाया।

तब गुरु जी ने शिष्यों से गुड्डे अपने हाथ में लेते हुए कहा, "प्रिय शिष्यों, इन तीन गुड्डों की तरह ही आपके जीवन में तीन तरह के व्यक्ति आयेंगे।

पहला गुड्डा ऐसे व्यक्तियों को दर्शाता है जो आपकी बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देंगे, आप ऐसे लोगों से कभी अपनी समस्या साझा ना करें।

दूसरा गुड्डा ऐसे लोगों को दर्शाता है जो आपकी बात सुनते हैं और उसे दूसरों के सामने जा कर बोलते हैं, इनसे बचें, और कभी अपनी महत्त्वपूर्ण बातें इन्हें ना बताएँ।

और तीसरा गुड्डा ऐसे लोगों का प्रतीक है जिनपर आप भरोसा कर सकते हैं, और उनसे किसी भी तरह का विचार–विमर्श कर सकते हैं, सलाह ले सकते हैं, यही वो लोग हैं जो आपकी ताकत है और इन्हें आपको कभी नहीं खोना चाहिए।"

18. माँ–ईश्वर का भेजा फरिश्ता

एक समय की बात है, एक बच्चे का जन्म होने वाला था. जन्म से कुछ क्षण पहले उसने भगवान् से पूछा– "मैं इतना छोटा हूँ, खुद से कुछ कर भी नहीं पाता, भला धरती पर मैं कैसे रहूँगा, कृपया मुझे अपने पास ही रहने दीजिये, मैं कहीं नहीं जाना चाहता।"

भगवान् बोले, "मेरे पास बहुत से फरिश्ते हैं, उन्ही में से एक मैंने तुम्हारे लिए चुन लिया है, वो तुम्हारा ख्याल रखेगा."

"पर आप मुझे बताइए, यहाँ स्वर्ग में मैं कुछ नहीं करता बस गाता और मुस्कुराता हूँ, मेरे लिए खुश रहने के लिए इतना ही बहुत है।"

"तुम्हारा फरिश्ता तुम्हारे लिए गायेगा और हर रोज तुम्हारे लिए मुस्कुराएगा भी, और तुम उसका प्रेम महसूस करोगे और खुश रहोगे।"

"और जब वहां लोग मुझसे बात करेंगे तो मैं समझूंगा कैसे, मुझे तो उनकी भाषा नहीं आती?"

"तुम्हारा फरिश्ता तुमसे सबसे मधुर और प्यारे शब्दों में बात करेगा, ऐसे शब्द जो तुमने यहाँ भी नहीं सुने होंगे, और बड़े धैर्य और सावधानी के साथ तुम्हारा फरिश्ता तुम्हे बोलना भी सीखाएगा।"

"और जब मुझे आपसे बात करनी हो तो मैं क्या करूँगा?"

"तुम्हारा फरिश्ता तुम्हे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना सीखाएगा, और इस तरह तुम मुझसे बात कर सकोगे।"

"मैंने सुना है कि धरती पर बुरे लोग भी होते हैं। उनसे मुझे कौन बचाएगा?"

"तुम्हारा फरिश्ता तुम्हे बचाएगा, भले ही उसकी अपनी जान पर खतरा क्यों ना आ जाये।"

"लेकिन मैं हमेशा दुखी रहूँगा क्योंकि मैं आपको नहीं देख पाऊंगा।"

"तुम इसकी चिंता मत करो; तुम्हारा फरिश्ता हमेशा तुमसे मेरे बारे में बात करेगा और तुम वापस मेरे पास कैसे आ सकते हो बतायेगा।"

उस वक्त स्वर्ग में असीम शांति थी, पर पृथ्वी से किसी के कराहने की आवाज आ रही थी..... .बच्चा समझ गया कि अब उसे जाना है, और उसने रोते–रोते भगवान् से पूछा, "हे ईश्वर, अब तो मैं जाने वाला हूँ, कृपया मुझे उस फरिश्ते का नाम बता दीजिये ?''

भगवान् बोले, "फरिश्ते के नाम का कोई महत्त्व नहीं है, बस इतना जानो कि तुम उसे "माँ" कह कर पुकारोगे।"

19. The Blind Girl (Change)

There was a blind girl who hated herself purely for the fact she was blind. The only person she didn't hate was her loving boyfriend, as he was always there for her. She said that if she could only see the world, she would marry him.

One day, someone donated a pair of eyes to her – now she could see everything, including her boyfriend. Her boyfriend asked her, "now that you can see the world, will you marry me?"

The girl was shocked when she saw that her boyfriend was blind too, and refused to marry him. Her boyfriend walked away in tears, and later wrote a letter to her saying:

"Just take care of my eyes dear."

Moral of the story

When our circumstances change, so does our mind. Some people may not be able to see the way things were before, and might not be able to appreciate them. There are many things to take away from this story, not just one.

20. Thinking Out of the Box (Creative Thinking)

In a small Italian town, hundreds of years ago, a small business owner owed a large sum of money to a loan-shark. The loan-shark was a very old, unattractive looking guy that just so happened to fancy the business owner's daughter.

He decided to offer the businessman a deal that would completely wipe out the debt he owed him. However, the catch was that we would only wipe out the debt if he could marry the businessman's daughter.

Needless to say, this proposal was met with a look of disgust.

The loan-shark said that he would place two pebbles into a bag, one white and one black.

The daughter would then have to reach into the bag and pick out a pebble. If it was black, the debt would be wiped, but the loan-shark would then marry her. If it was white, the debt would also be wiped, but the daughter wouldn't have to marry the loan-shark.

Standing on a pebble-strewn path in the businessman's garden, the loan-shark bent over and picked up two pebbles.

Whilst he was picking them up, the daughter noticed that he'd picked up two black pebbles and placed them both into the bag.

He then asked the daughter to reach into the bag and pick one.

The daughter naturally had three choices as to what she could have done:

1. Refuse to pick a pebble from the bag.
2. Take both pebbles out of the bag and expose the loan-shark for cheating.
3. Pick a pebble from the bag fully well knowing it was black and sacrifice herself for her father's freedom.

She drew out a pebble from the bag, and before looking at it 'accidentally' dropped it into the midst of the other pebbles. She said to the loan-shark;

"Oh, how clumsy of me. Never mind, if you look into the bag for the one that is left, you will be able to tell which pebble I picked."

The pebble left in the bag is obviously black, and seeing as the loan-shark didn't want to be exposed, he had to play along as if the pebble the daughter dropped was white, and clear her father's debt.

Moral of the story

It's always possible to overcome a tough situation throughout of the box thinking, and not give in to the only options you think you have to pick from.

Sandipani Academy is situated at Achhoti, spread over an area of 5.2 acre with the sole aim to provide opportunity to students for their holistic development of their personality through academic and non-academic activities. The foresighted vision of the management is to emphasis the practical application of theoretical knowledge. **Sandipani Academy** intends to bring qualitative improvement. The college aims to provide educational excellence to students, providing them guidance and care for their individual development. Sandipany Academy always tries to nurture the moral and ethical values in students so that they will become responsible citizen of the country.

Address :
SANDIPANI ACADEMY, Kumhari - Ahiwara Road,
Achhoti (Murmunda), Distt-Durg (CG).
Website : www.sandipanigroup.org,
Contact number : 9009077222, 9300008230

SANDIPANI ACADEMY

Aditi Publication
ADITI PUBLICATION
Near Ice Factory, Opp. Shakti Sound, Service Gali, Kushalpur, Raipur (C.G.)
Mob. 91 94252 10308, E-mail:shodhsamagam1@gmail.com, www.shodhsamagam.com

9 788195 308354
₹ 99